Read India
An Imprint of Pratham Books

कुहू-कुहू कोयल

जयश्री देशपांडे
श्रीकृष्णा केडीलाया

Original Story (*Kannada*) Kuhu Kuhu Kogile by Jayashree Deshpande
© Pratham Books, 2004

Second Hindi Edition: 2009

Illustrations & Design: Srikrishna Kedilaya
Hindi Translation: K. Vijaya

ISBN : 81-8263-127-0

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices: Mumbai ✆ 022-65162526 and New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Pratham Books, Delhi

Printed by: Manipal Press, Manipal

Published by:
Pratham Books
www.prathambooks.org

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

कुहू-कुहू कोयल

लेखन : जयश्री देशपांडे

चित्रांकन : श्रीकृष्णा केडीलाया

हिन्दी अनुवाद : के. विजया

यह पुस्तक

_____

_____

_____

की है।

राजू दादाजी के घर छुट्टियाँ
बिताने आया था। एक दिन जब
वह सुबह उठा तो बाहर से बड़ी
मीठी आवाज़ सुनाई दी।
२

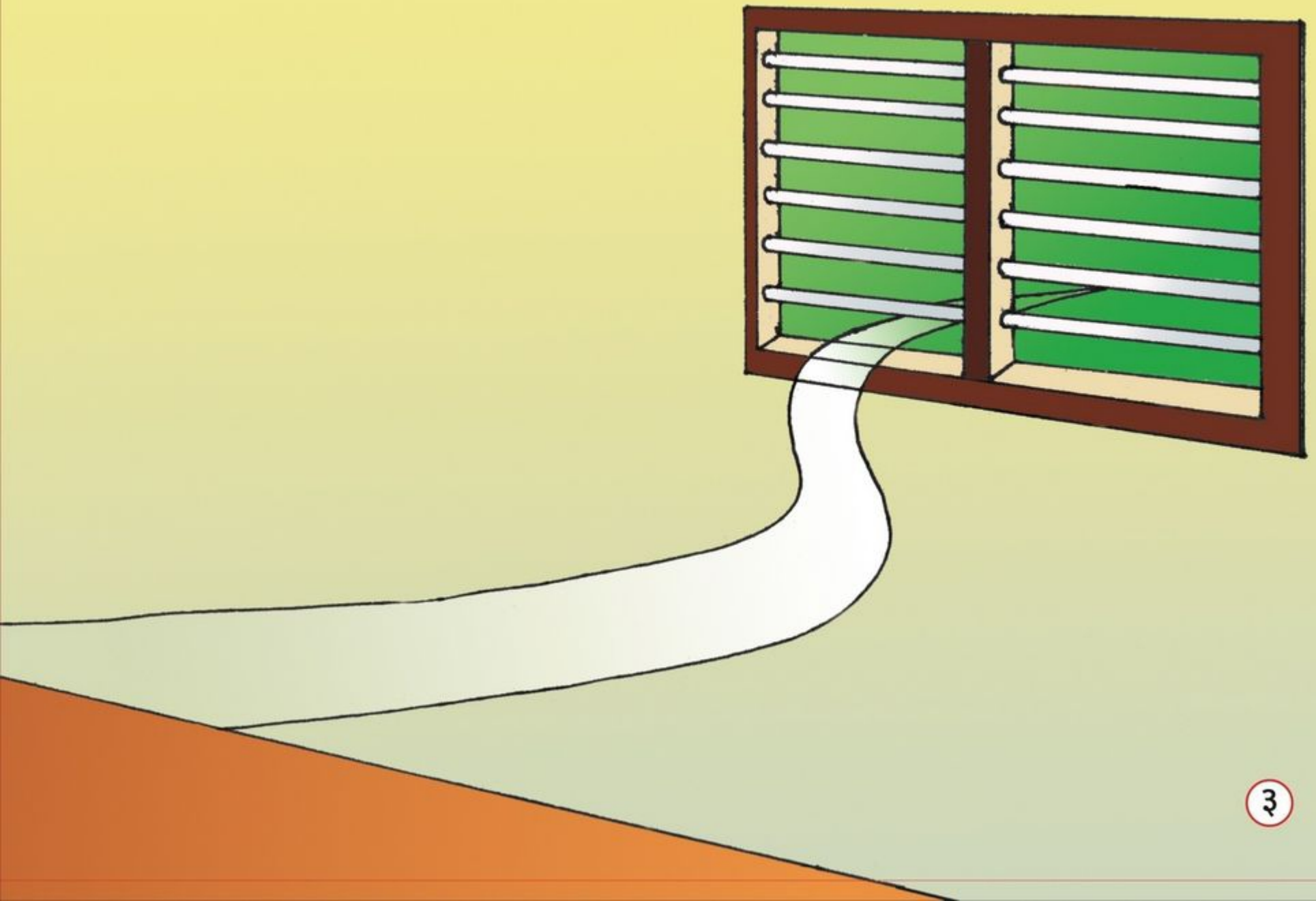

कोयल आम के पेड़ पर
बैठी आवाज़ दे रही थी,
''कुहू-कुहू-कुहू।''

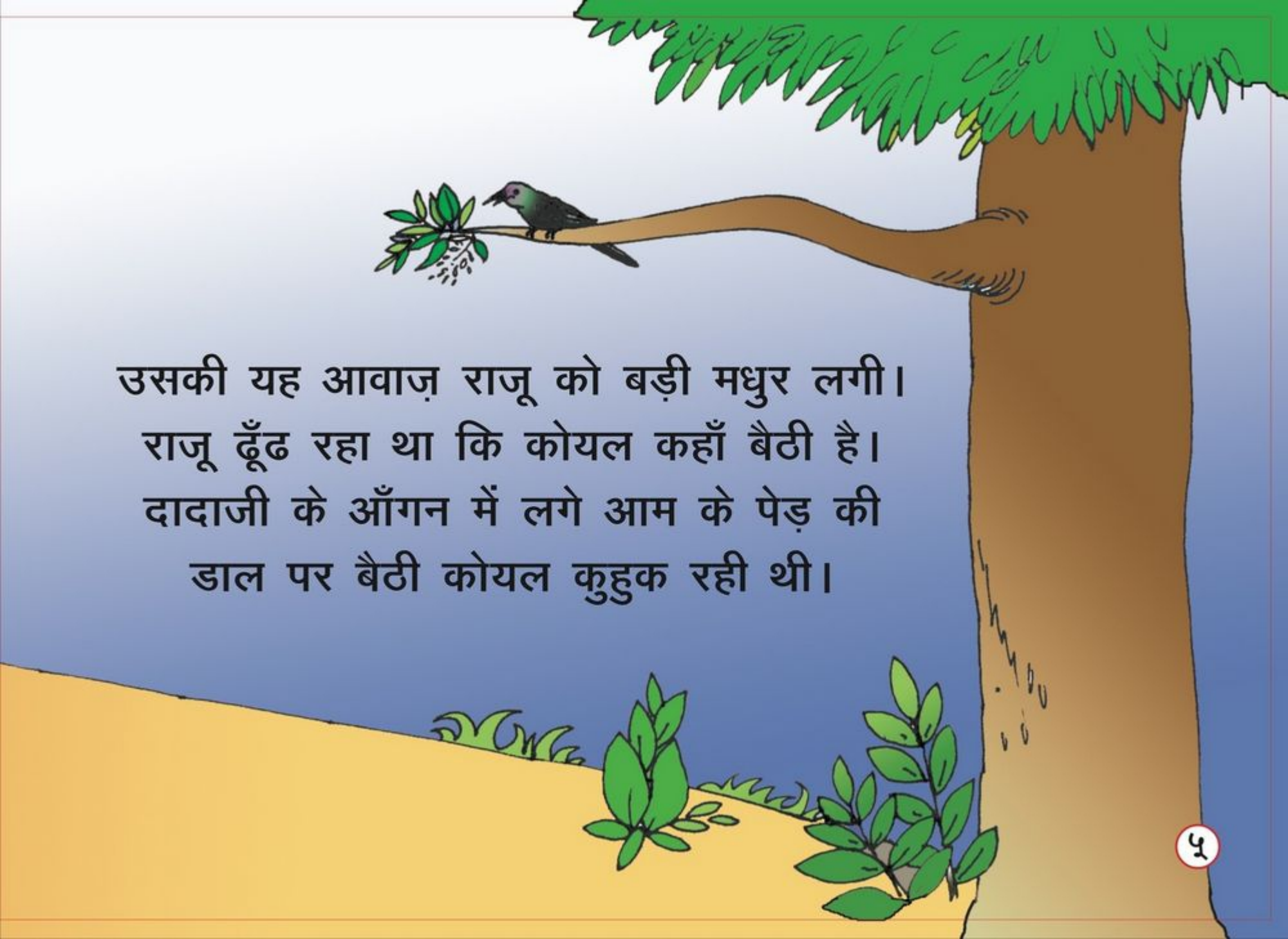

उसकी यह आवाज़ राजू को बड़ी मधुर लगी।
राजू ढूँढ रहा था कि कोयल कहाँ बैठी है।
दादाजी के आँगन में लगे आम के पेड़ की
डाल पर बैठी कोयल कुहुक रही थी।

राजू को देख कर कोयल
बोली, ''कुहू-कुहू राजू।''
राजू खुश होकर बोला,
''ओह कोयल, क्या तुम्हें
मेरा नाम मालूम है?''

कोयल ने कहा, ''हाँ मुझे सब
पता है। मेरा गाना कैसा है,
बताओ तो?''

राजू ने कहा, ''तुम बहुत मीठा
गाती हो। मुझे तुम्हारी आवाज़
बड़ी अच्छी लगी।''

''हाँ, जब वसंत ऋतु में आम के
पेड़ों पर बौर आता है, हम कोयल इसी तरह
सारे दिन कुहू-कुहू गाती रहती हैं।''

राजू बहुत खुश हुआ, ''कोयल, क्या तुम मेरे साथ शहर आओगी? वहाँ सब लोग तुम्हारा गाना पसंद करेंगे।''

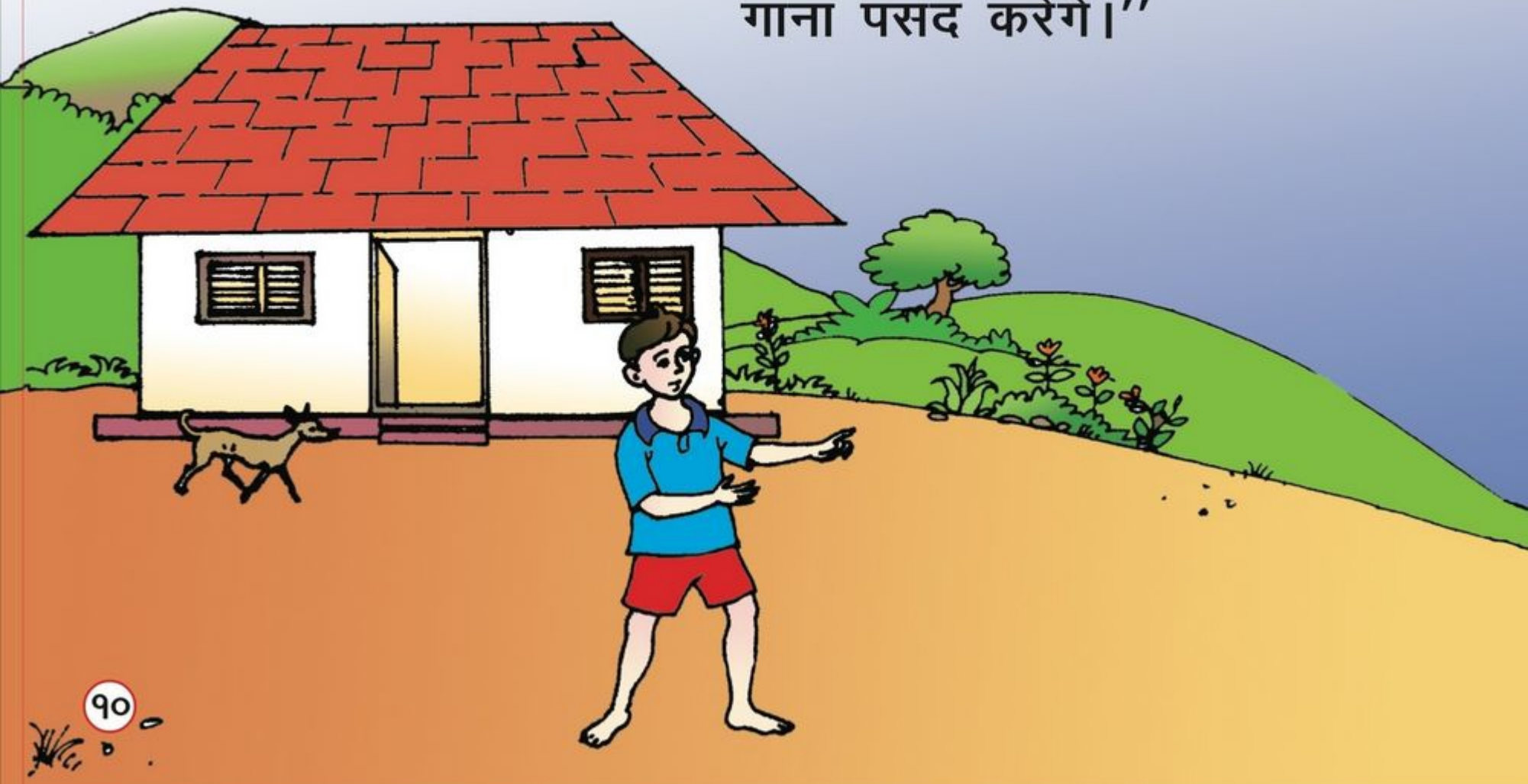

कोयल ने कहा, ''क्या मैं शहर आऊँ? लेकिन मेरे सैंकड़ों रिश्तेदार तुम्हारे यहाँ ही रहते हैं। फिर मैं क्यों आऊँ?''

''क्या? क्या सैंकड़ों कोयल शहर में हैं?'' राजू अचरज में पड़ गया। ''लेकिन वहाँ हम में से किसी ने भी तुम्हारा गाना सुना ही नहीं है।''

कोयल कुछ उदास हो गयी। वह बोली, ''गर्मी के पहले वसंत ऋतु आती है। सभी पेड़ खिले फूलों से भर जाते हैं। तब हम सभी कोयल ज़रूर गाती हैं। लेकिन तुम्हारे शहरों में दिनभर सैंकड़ों गाड़ियाँ दौड़ती रहती हैं। आसमान में भी हवाईजहाज़ उड़ानें भरते रहते हैं। वहाँ दिनभर शोर-शराबा रहता है। इस शोर में कोयल का गाना तुम लोगों को कैसे सुनाई देगा, बताओ?''

कोयल की बात सच थी।
राजू को दुख हुआ। वह पूछ
बैठा, ''कोयलिया रे, अगर
शहर में गाड़ियों का
शोर-शराबा कम हो जाये
और शांति छा जाए तो वहाँ
आकर गाओगी?''

कोयल ने जवाब दिया, ''हाँ-हाँ, तब मैं ज़रूर आऊँगी और बाकी सभी कोयलों का गाना भी तुम लोग सुन पाओगे।''

यह बात सुन कर राजू बहुत खुश हुआ।

इतने में दादा जी अन्दर से आये और बोले, ''राजू, कोयल का गाना सुन रहे हो क्या?''

''हाँ, दादा जी, यह कितना मधुर गाती है न?''
''हाँ राजू,'' कहकर दादा जी ने पूछा, ''क्या तुम कोयल की कहानी जानते हो?''

राजू बोला, ''नहीं, कौन सी कहानी दादा जी?''

वह बोले, ''कोयल कुछ आलसी चिड़िया होती है। माँ कोयल अपने बच्चों के पालन पोषण का कष्ट नहीं उठाना चाहती। इसीलिए अपने अण्डे कौओं के घोंसले में रख देती है। कौआ अपने अण्डों के साथ इन्हें भी सेता है।

कोयल के बच्चों का रंग भी कौओं के बच्चों के रंग की तरह ही काला होता है, इसलिए मादा कौआ अपने बच्चों के भ्रम में इनका भी भरण पोषण करती है।

आगे जब कोयल का बच्चा
मीठी आवाज़ में गाने
लगता है तब कौए को
लगता है कि यह उसका
बच्चा नहीं है। तब वह
उसे अपने घोंसले से भगा
देती है। उसके बाद वह
कोयल का बच्चा अपना
आहार खुद ढूँढ लेता है
और अपनी ज़िन्दगी
जीता है।''
२०

दादाजी की बातें सुनकर राजू ने कहा, ''अरे वाह री कोयलिया, तुम्हारी कहानी तो बड़ी विचित्र निकली!''

''हाँ राजू, जानवरों और पंछियों की दुनिया में ऐसी अनेक विचित्र बातें होती हैं।'' जब दादाजी यह बोले तो,

''कुहू-कुहू! हाँ राजू हाँ।'' कहते हुए कोयल दूसरे पेड़ पर उड़ गई और गाने लगी।

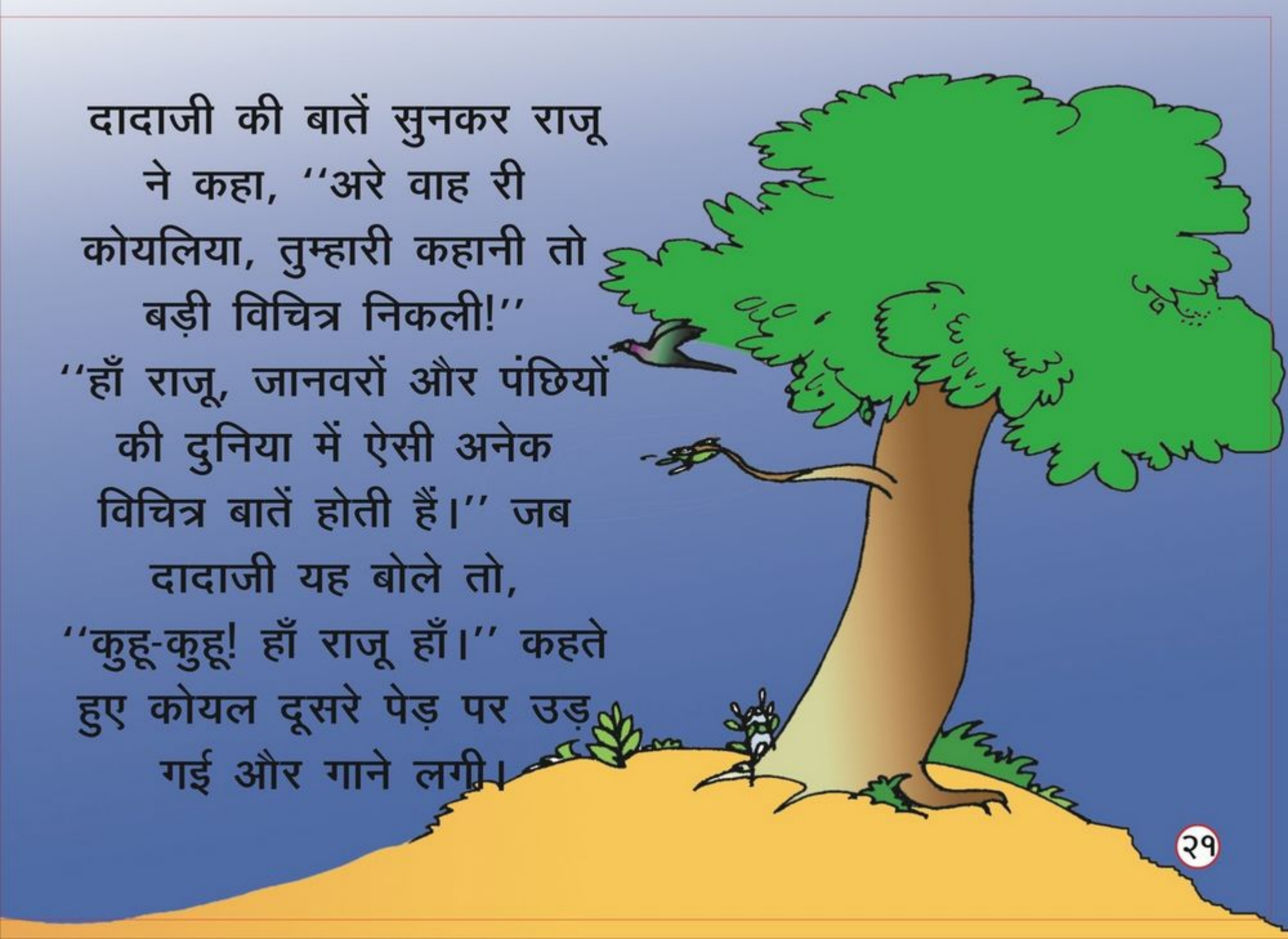

इस चित्र में रंग भरो।

इस चित्र में रंग भरो।

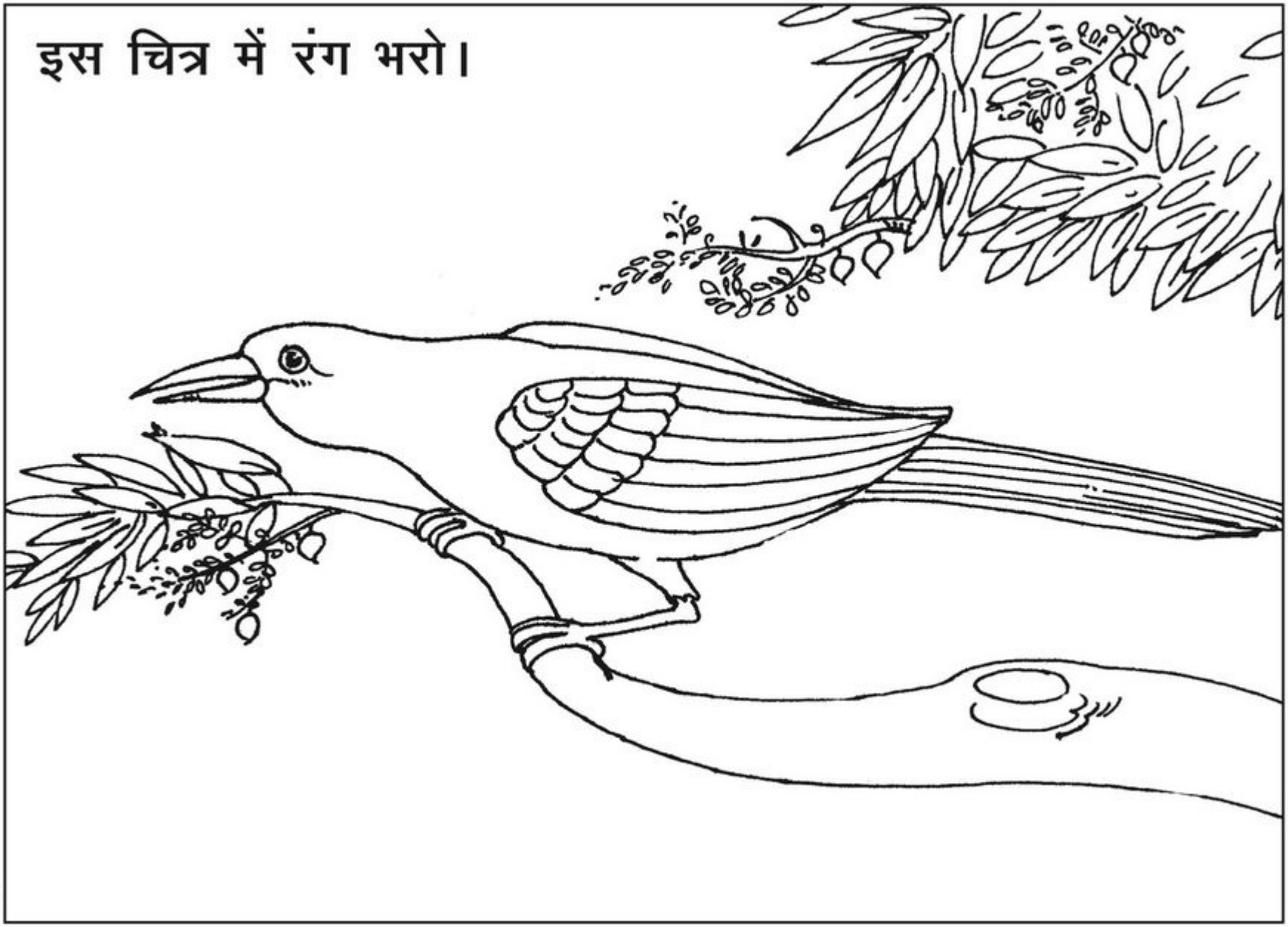

हेलो। मेरा नाम चंदा है और मैं अपने परिवार में पहली डॉक्टर बनूँगी। कमप्यूटर सीखने का भी बहुत मन है। ऋतिक रोशन का डान्स और ऐश्वर्य राय की आँखें बहुत अच्छी लगती हैं।
यह किताब खरीदने के लिये शुक्रिया। आपने यह किताब खरीदी तो मेरे पुस्तकालय में और भी बहुत सी किताबें आयेंगी जिन्हें मैं और मेरे दोस्त पढ़ सकेंगे।

जयश्री देशपाण्डे ने कन्नड़ में बहुत सी लघु कथाएँ, निबन्ध, हास्य लेख व उपन्यास लिखे हैं। वे पन्द्रह वर्षों से लिखती आ रही है और उनकी कहानियाँ सभी मुख्य कन्नड़ पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। उन्होंने अमेरिका व यूरोप में यात्रा करी है और उन्हें यात्रा वृत्तान्त लिखना भी अच्छा लगता है। उन्हें यात्रा, फ़ोटोग्राफ़ी व साहित्य में रुचि है।

श्रीकृष्णा केडीलया चित्रकार हैं जो दस सालों से एक विज्ञापन एजेंसी में काम कर रहे हैं। उन्होंने कन्नड़ की बहुत सी किताबों का रूपांकन व आवरण सज्जा की है।

अपने शहरों में हमें अब कोयल की मीठी आवाज़ क्यों नहीं सुनाई देती? दादाजी के यहाँ, शहर से आए राजू को कोयल से ऐसे कई सवालों के जवाब मिले। इसी के बारे में यह रोचक कहानी पढ़िये।

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

राजू और तरकारी • मछली ने समाचार सुने • गौरैया और अमरूद
रंग बिरंगी सुंदर मछली • कौए के रिश्तेदार • कछुआ और खरगोश
नौका विहार • स्वाद अनार का • बुलबुलों वाला फेनीला दूध

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये www.prathambooks.org पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

Age Group: 7-10 years
Kuhu Kuhu Koyal (Hindi)
MRP: Rs. 20.00

ISBN 818263127-0
9788182631274